

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

Surah 77 — Al-Mursalaat (The Emissaries) · Meccan · 50 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا

हवाओं की कसम जो (पहले) धीमी चलती हैं

2

فَالْعَصْفِ عَصْفًا

फिर ज़ोर पकड़ के आँधी हो जाती हैं

3

وَالنُّشْرِتِ نَشْرًا

और (बादलों को) उभार कर फैला देती हैं

4

فَالْفُرْقَتِ فَرْقًا

फिर (उनको) फाड़ कर जुदा कर देती हैं

5

فَالْمُلْقِيَتِ ذِكْرًا

फिर फरिश्तों की कसम जो वही लाते हैं

6

عُذْرًا أَوْ نُذْرًا

ताकि हुज्जत तमाम हो और डरा दिया जाए

7

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَقْعٍ

कि जिस बात का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर होकर रहेगा

8

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ

फिर जब तारों की चमक जाती रहेगी

9

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ

और जब आसमान फट जाएगा

10

وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ

और जब पहाड़ (रूई की तरह) उड़े उड़े फिरेंगे

11

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقْتَتَتْ

और जब पैग़म्बर लोग एक मुअय्यन वक्त पर जमा किए जाएँगे

12

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ

(फिर) भला इन (बातों) में किस दिन के लिए ताखीर की गयी है

13

لِيَوْمِ الْفَصْلِ

फ़ैसले के दिन के लिए

14

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ

और तुमको क्या मालूम की फ़ैसले का दिन क्या है

15

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी खराब है

16

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ

क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया

17

ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ

फिर उनके पीछे पीछे पिछ्लों को भी चलता करेंगे

18

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ

हम गुनेहगारों के साथ ऐसा ही किया करते हैं

19

وَيَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी खराब है

20

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ

क्या हमने तुमको ज़लील पानी (मनी) से पैदा नहीं किया

21

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ

फिर हमने उसको एक मुअय्यन वक्त तक

22

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ

एक महफूज़ मक़ाम (रहम) में रखा

23

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ

फिर (उसका) एक अन्दाज़ा मुक़रर किया तो हम कैसा अच्छा अन्दाज़ा मुक़रर करने वाले हैं

24

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उन दिन झुठलाने वालों की खराबी है

25

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا

क्या हमने ज़मीन को ज़िन्दों और मुर्दों को समेटने वाली नहीं बनाया

26

أَحْيَاءَ ۚ وَأَمْوَاتٍ ۚ

और उसमें ऊँचे ऊँचे अटल पहाड़ रख दिए

27

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوْسِيَ شُمَخْتٍ ۚ وَأَسْقَيْنُكُمْ مَّاءً ۚ فُرَاتًا ۚ

और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया

28

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

29

أَنْطَلِقُوا ۚ إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ ۚ تُكَذِّبُونَ

जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे अब उसकी तरफ़ चलो

30

أَنْطَلِقُوا ۚ إِلَىٰ ظِلٍّ ۚ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۚ

(धुएँ के) साये की तरफ़ चलो जिसके तीन हिस्से हैं

31

لَا ظَلِيلٍ ۚ وَلَا يُغْنِي مِنَ الْلَّهِبِ

जिसमें न ठण्डक है और न जहन्नुम की लपक से बचाएगा

32

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ ۖ كَالْقَصْرِ

उससे इतने बड़े बड़े अंगारे बरसते होंगे जैसे महल

33

كَأَنَّهُ ۖ جُمِلَتْ ۖ صُفْرًا ۖ

गोया ज़र्द रंग के ऊँट हैं

34

وَيْلٌ ۖ يَوْمَئِذٍ ۖ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

35

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ

ये वह दिन होगा कि लोग लब तक न हिला सकेंगे

36

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ

और उनको इजाज़त दी जाएगी कि कुछ उज्र माअज़ेरत कर सकें

37

وَيْلٌ ۖ يَوْمَئِذٍ ۖ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है

38

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ

यही फैसले का दिन है (जिस में) हमने तुमको और अगलों को इकट्ठा किया है

39

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ ۖ فَكِيدُوا

तो अगर तुम्हें कोई दाँव करना हो तो आओ चल चुको

40

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

41

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۚ

बेशक परहेज़गार लोग (दरख्तों की) घनी छाँव में होंगे

42

وَفَوْكَهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ

और चश्मों और आदमियों में जो उन्हें मरगूब हो

43

كُلُوا ۚ وَأَشْرِبُوا ۚ هَنِيئًا ۚ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(दुनिया में) जो अमल करते थे उसके बदले में मज़े से खाओ पियो

44

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

मुबारक हम नेकोकारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं

45

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

46

كُلُوا ۚ وَتَمَتَّعُوا ۚ قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ

(झुठलाने वालों) चन्द दिन चैन से खा पी लो तुम बेशक गुनेहगार हो

47

وَيْلٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी खराब है

48

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا ۖ لَا يَرْكَعُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि रूकूँ करो तो रूकूँ नहीं करते

49

وَيَلَّ ۖ يَوْمَئِذٍ ۖ لِلْمُكَذِّبِينَ

उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

50

فَبَأَيِّ حَدِيثٍ ۖ بَعْدَهُ ۖ يُؤْمِنُونَ

अब इसके बाद ये किस बात पर ईमान लाएँगे